पाठ 31

1. जब परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र से बाहर ले गया, तब परमेश्वर इस्राएलियों को किस देश में ले जा रहा था?

-वापस कनान देश में।

2. परमेश्वर ने इस्राएलियों को दिन के समय किस प्रकार अगुवाई दी?

-एक बादल के साथ।

3. परमेश्वर ने इस्राएलियों को रात में कैसे अगुवाई दी?

-आग के खंभे के साथ।

4. परमेश्वर इस्राएलियों को लाल समुद्र के किनारे तक क्यों ले गया?

-परमेश्वर मिस्रियों और इस्राएलियों दोनों को दिखाना चाहता था कि वह अकेला ही परमेश्वर है।

5. इस्राएलियों ने क्या किया जब उन्होंने फिरौन और उसकी सेना को उन्हें फिर से पकड़ने के लिए आते देखा?

-इस्राएलियों ने मूसा पर दोष लगाया, और कहा कि उन्हें मिस्र में रहना चाहिए था।

6. क्या इस्राएली स्वयं को बचाने में सक्षम थे?

-नहीं।

7. इस्राएली स्वयं को बचाने में सक्षम क्यों नहीं थे?

-क्योंकि लाल समुद्र उनके आगे था, उनके दोनों ओर पहाड़ थे, और फिरौन और उसकी सेना उनके पीछे थी।

8. इस्राएलियों को बचाने वाला एकमात्र व्यक्ति कौन था?

-परमेश्वर।

9. लाल समुद्र को खोलना परमेश्वर के लिए कठिन क्यों नहीं था?

-क्योंकि परमेश्वर ने लाल सागर बनाया।

-क्योंकि परमेश्वर सभी समुद्रों के स्वामी हैं।

-क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, और सब कुछ कर सकता है।

10. क्योंकि फिरौन और उसकी सेना इस्राएलियों को फिर से पकड़ने के लिए आ रही थी, परमेश्वर ने इस्राएलियों की रक्षा के लिए क्या किया?

-परमेश्वर ने इस्राएलियों और फिरौन की सेना के बीच एक बादल रखा।

-बादल ने इस्राएलियों पर प्रकाश डाला, और फिरौन और उसकी सेना के लिए अंधेरा कर दिया।

11. फिरौन और उसकी सेना के इस्राएलियों के पीछे लाल समुद्र में जाने के बाद परमेश्वर ने क्या किया?

-परमेश्वर ने फिरौन और उसकी सेना को लाल सागर में डुबो दिया।

12. परमेश्वर ने इस्राएलियों की रक्षा क्यों की?

-क्योंकि परमेश्वर ने इब्राहीम और इस्राएलियों के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजने का वादा किया था।

-क्योंकि परमेश्वर भी अब्राहम और इस्राएलियों के द्वारा अपनी बाइबल भेजना चाहता था।

-जब परमेश्वर ने फिरौन और उसकी सेना को लाल समुद्र में नाश किया, तब परमेश्वर इस्राएलियों को कहां ले गया?

-रेगिस्तान में।

-रेगिस्तान क्या है?

-रेगिस्तान एक ऐसी भूमि है जहाँ केवल रेत होती है।

-रेगिस्तान में लगभग कोई मिट्टी नहीं है।

-रेगिस्तान में लगभग घास नहीं है।

-रेगिस्तान में लगभग कोई पेड़ नहीं हैं।

-रेगिस्तान में केवल रेत है।

-जब परमेश्वर इस्राएलियों को जंगल में ले जा रहा था, तो इस्राएलियों ने क्या किया?

आइए पढ़ें निर्गमन 16:1-3

1 और सारी इस्राएली मण्डली एलीम से कूच करके सीन मरुभूमि में पहुंची, जो एलीम और सीनै के बीच में है, दूसरे महीने के पन्द्रहवें दिन को, जब वे मिस्र से निकली थीं।

2- जंगल में सारी मण्डली मूसा और हारून के विरुद्ध कुड़कुड़ाने लगी।

3-इस्राएलियों ने उन से कहा, यदि हम मिस्र में यहोवा के हाथ से मरते! वहाँ हम ने मांस के बर्तनों के चारों ओर बैठकर जो कुछ हम चाहते थे, खा लिया, परन्तु तू ने हमें इस जंगल में निकाल दिया है कि इस सारी सभा को मौत के घाट उतार दिया जाए।

-इस्राएलियों ने मूसा और हारून की आलोचना की।

-इस्राएलियों ने मूसा और हारून की आलोचना क्यों की?

-क्योंकि उनके पास खाना नहीं था।

-इस्राएलियों के पास खाना क्यों नहीं था?

-क्योंकि रेगिस्तान में खाना नहीं था।

-रेगिस्तान में केवल रेत थी।

-क्या मूसा इस्राएलियों के लिए मरुभूमि में भोजन ढूंढ़ने में सक्षम था?

-नहीं।

-मूसा को रेगिस्तान में इस्राएलियों के लिए भोजन क्यों नहीं मिला?

-क्योंकि रेगिस्तान में खाना नहीं था।

-क्या इस्राएली मरुभूमि में अपने लिए भोजन ढूंढ़ने में सक्षम थे?

-नहीं।

-इस्राएलियों को रेगिस्तान में अपने लिए भोजन क्यों नहीं मिल रहा था?

-क्योंकि रेगिस्तान में खाना नहीं था।

-अकेला कौन था जो रेगिस्तान में इस्राएलियों को भोजन देने में सक्षम था?

-परमेश्वर।

-क्या इस्राएलियों ने परमेश्वर को रेगिस्तान में भोजन देने के लिए विश्वास किया था?

-नहीं।

-जंगल में उन्हें भोजन देने के लिए परमेश्वर पर विश्वास करने के बजाय, इस्राएलियों ने क्या किया?

-उन्होंने मूसा और हारून की आलोचना की।

-क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों को मूसा और हारून की आलोचना करते सुना?

-हां।

-परमेश्वर ने मूसा से क्या कहा?

आइए पढ़ें निर्गमन 16:11-12

11-यहोवा ने मूसा से कहा,

12- “मैंने इस्राएलियों का बड़बड़ाते सुना है। उनसे कहो, 'साँझ के समय तुम मांस खाओगे, और भोर को तुम रोटी से भर जाओगे। तब तुम जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।’”

-परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह इस्राएलियों को भोजन देगा।

-हालाँकि इस्राएलियों ने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया, फिर भी परमेश्वर ने कहा कि वह उन्हें भोजन देगा।

-ईश्वर इस्राएलियों की मदद कर रहा था, भले ही वे उस पर विश्वास नहीं करते थे।

-परमेश्वर लोगों की मदद क्यों करते हैं, भले ही वे उस पर विश्वास नहीं करते हैं?

-क्योंकि परमेश्वर ने सभी लोगों को बनाया है।

-क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों से प्यार करता है।

-क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों को बचाना चाहता है।

-क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि सभी लोग उस पर विश्वास करें।

-अगर हम परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं, तो क्या परमेश्वर हमें बचाएगा?

-नहीं।

-क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों को भूख से मरने दिया?

-क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों को भोजन दिया?

आइए पढ़ें निर्गमन 16:13क

13-उस शाम बटेर ने आकर छावनी को ढांप दिया।

-वह मांस क्या था जो परमेश्वर ने उस शाम इस्राएलियों को जंगल में दिया था?

-बटेर।

-इतने बटेर थे कि उन्होंने इस्राएलियों की छावनी को ढांप दिया।

-अगली सुबह, परमेश्वर ने इस्राएलियों को अधिक भोजन दिया।

आइए पढ़ें निर्गमन 16:13ख-15, 31

13-बिहान को छावनी के चारों ओर ओस की परत पड़ी।

14-जब ओस चली गई, तो रेगिस्तान के फर्श पर जमीन पर पाले जैसे पतले गुच्छे दिखाई देने लगे।

15-जब इस्राएलियों ने यह देखा तो आपस में कहने लगे, "यह क्या है?" क्योंकि वे नहीं जानते थे कि यह क्या है। मूसा ने उन से कहा, यह वह रोटी है जो यहोवा ने तुम्हें खाने को दी है।

31-इस्राएल के लोगों ने रोटी को मन्ना कहा। यह धनिये के दाने के समान सफेद और शहद से बनी वेफर्स की तरह चखता था।

-अगली सुबह परमेश्वर ने इस्राएलियों को क्या भोजन दिया?

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को रोटी दी।

-रोटी छावनी के चारों ओर फैली हुई थी।

-इस्राएलियों ने उस रोटी को क्या कहा जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग से उतारा था?

-मन्ना।

- हर सुबह, परमेश्वर ने इस्राएलियों को खिलाने के लिए स्वर्ग से ओस के रूप में रोटी भेजी।

-स्वर्ग का मन्ना जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को प्रतिदिन प्रातः दिया, वह परमेश्वर के अनुग्रह का प्रतीक था।

-भले ही आदम और हव्वा ने परमेश्वर की अवज्ञा की, परमेश्वर ने अपनी कृपा से हमें बचाने के लिए उद्धारकर्ता भेजने का वादा किया।

- भले ही नूह और उसका परिवार पापी थे, फिर भी परमेश्वर ने अपनी कृपा से उन्हें बाढ़ से बचाया।

- भले ही इस्राएलियों ने ईश्वर पर विश्वास नहीं किया, लेकिन ईश्वर ने अपनी कृपा से उन्हें मिस्र की गुलामी से बचाया।

- हालाँकि इस्राएलियों को विश्वास नहीं था कि परमेश्वर उन्हें बचाने में सक्षम है, फिर भी परमेश्वर ने अपनी कृपा से लाल समुद्र को खोल दिया ताकि वे फिरौन और उसकी सेना से बच सकें।

-ये सभी ईश्वर की कृपा के संकेत हैं।

- जितने वर्ष इस्राएली जंगल में रहे, जितने वर्ष तक परमेश्वर ने उन्हें प्रतिदिन मन्ना दिया।

आइए पढ़ें निर्गमन 16:35

35 इस्राएली चालीस वर्ष तक मन्ना खाते रहे, जब तक कि वे बसे हुए देश में न पहुंच गए; वे कनान देश के सिवाने तक मन्ना खाते रहे।

-इस्राएलियों को मन्ना देने के लिए परमेश्वर एक दिन कभी नहीं भूले।

-परमेश्वर हमेशा अपने वादे रखता है।

- भले ही परमेश्वर ने इस्राएलियों को बटेर और मन्ना दिया था, फिर भी इस्राएलियों ने फिर से शिकायत की।

आइए पढ़ें निर्गमन 17:1-4

1- सारी इस्राएली मण्डली सीन के जंगल में से निकली, और यहोवा की आज्ञा के अनुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूच करती रही। उन्होंने रपीदीम में डेरे डाले, परन्तु लोगों के पीने के लिए पानी नहीं था।

2 सो उन्होंने मूसा से झगड़ा किया, और कहा, हमें पीने का पानी दे। मूसा ने उत्तर दिया, "तू मुझ से क्यों झगड़ता है? तुम यहोवा की परीक्षा क्यों लेते हो?"

3-परन्तु वे लोग जल के प्यासे थे, और वे मूसा पर कुड़कुड़ाने लगे। उन्होंने कहा, “तू हमें मिस्र से क्यों निकाल लाया कि हमें और हमारे बच्चों और पशुओं को प्यासा मरवा दें?”

4-तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, “मैं इन लोगों से क्या करूँ? वे मुझ पर पथराव करने के लिए लगभग तैयार हैं।"

-इस्राएली शिकायत क्यों कर रहे थे?

-क्योंकि उनके पास पानी नहीं था।

-इस्राएलियों के पास पानी क्यों नहीं था?

-क्योंकि वे रेगिस्तान में थे।

-क्योंकि रेगिस्तान में लगभग पानी नहीं है।

-क्या मूसा इस्राएलियों के लिए मरुभूमि में पानी ढूंढ सका?

-नहीं।

-मूसा इस्राएलियों के लिए रेगिस्तान में पानी क्यों नहीं ढूंढ पाया?

-क्योंकि रेगिस्तान में लगभग पानी नहीं है।

-क्या इस्राएली मरुभूमि में अपने लिए पानी ढूंढ़ पाए?

-नहीं।

-इस्राएली रेगिस्तान में अपने लिए पानी क्यों नहीं ढूंढ पाए?

-क्योंकि रेगिस्तान में लगभग पानी नहीं है।

-अकेला कौन है जो इस्राएलियों को रेगिस्तान में पानी देने में सक्षम था?

-परमेश्वर।

-क्या इस्राएलियों ने परमेश्वर को रेगिस्तान में पानी देने के लिए विश्वास किया था?

-नहीं।

-जंगल में पानी देने के लिए परमेश्वर पर विश्वास करने के बजाय, इस्राएलियों ने क्या किया?

-उन्होंने मूसा और हारून की आलोचना की।

-क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों को मूसा और हारून की आलोचना करते सुना?

-हां।

-क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों को प्यास से मरने दिया?

-परमेश्वर ने मूसा से क्या कहा?

आइए पढ़ें निर्गमन 17:5-6क

5-यहोवा ने मूसा को उत्तर दिया, "लोगों के आगे-आगे चलो। इस्त्राएल के कुछ पुरनियोंको अपके साथ ले, और जिस लाठी से तू ने नील नदी को मारा है, उसे अपके हाथ में ले, और चला जा।

6-मैं वहां होरेब की चट्टान के पास तुम्हारे साम्हने खड़ा रहूंगा। चट्टान पर प्रहार करो, और लोगों के पीने के लिए उसमें से पानी निकलेगा।"

-पानी लाने के लिए परमेश्वर ने मूसा से क्या करने को कहा?

-परमेश्वर ने मूसा को अपने कर्मचारियों के साथ एक चट्टान पर प्रहार करने की आज्ञा दी।

-अगर मूसा ने परमेश्वर की बात मानी, तो परमेश्वर इस्राएलियों को चट्टान से पानी देगा।

-कौन अकेला इस्राएलियों को चट्टान से पानी देने में सक्षम था?

-परमेश्वर।

-क्या मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा मानी?

आइए पढ़ें निर्गमन 17:6

6 इस प्रकार मूसा ने इस्राएल के पुरनियों के साम्हने ऐसा किया।

-मूसा ने परमेश्वर की बात मानी।

-जैसा कि परमेश्वर ने उसे बताया था, मूसा ने अपने कर्मचारियों के साथ चट्टान को मारा।

-क्योंकि मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा मानी, परमेश्वर ने इस्राएलियों को जल दिया।

-जब हम परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, तो परमेश्वर हमें बचाएगा।

-जब हम परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं, परमेश्वर हमें नहीं बचाएंगे।

-हमें परमेश्वर के मार्ग के अनुसार परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

-हम अपने तरीके से चलकर परमेश्वर की आज्ञा नहीं मान सकते।

-अगर हम अपने रास्ते चले गए, तो परमेश्वर हमें नहीं बचाएंगे।

-परमेश्वर हमें तभी बचाएंगे जब हम परमेश्वर के रास्ते पर चलेंगे।

-कौन अकेला हमें पाप की शक्ति से बचा सकता है?

-केवल परमेश्वर।

-कौन अकेला हमें मृत्यु की शक्ति से बचा सकता है?

-केवल परमेश्वर।

-केवल शैतान की शक्ति से हमें कौन बचा सकता है?

-केवल परमेश्वर।

-क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनके निर्णय के अनुसार बचाया था?

-नहीं।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को कैसे बचाया?

-जिस तरह से परमेश्वर ने फैसला किया।

-परमेश्वर सभी लोगों को कैसे बचाता है?

-जिस तरह से परमेश्वर तय करते हैं।